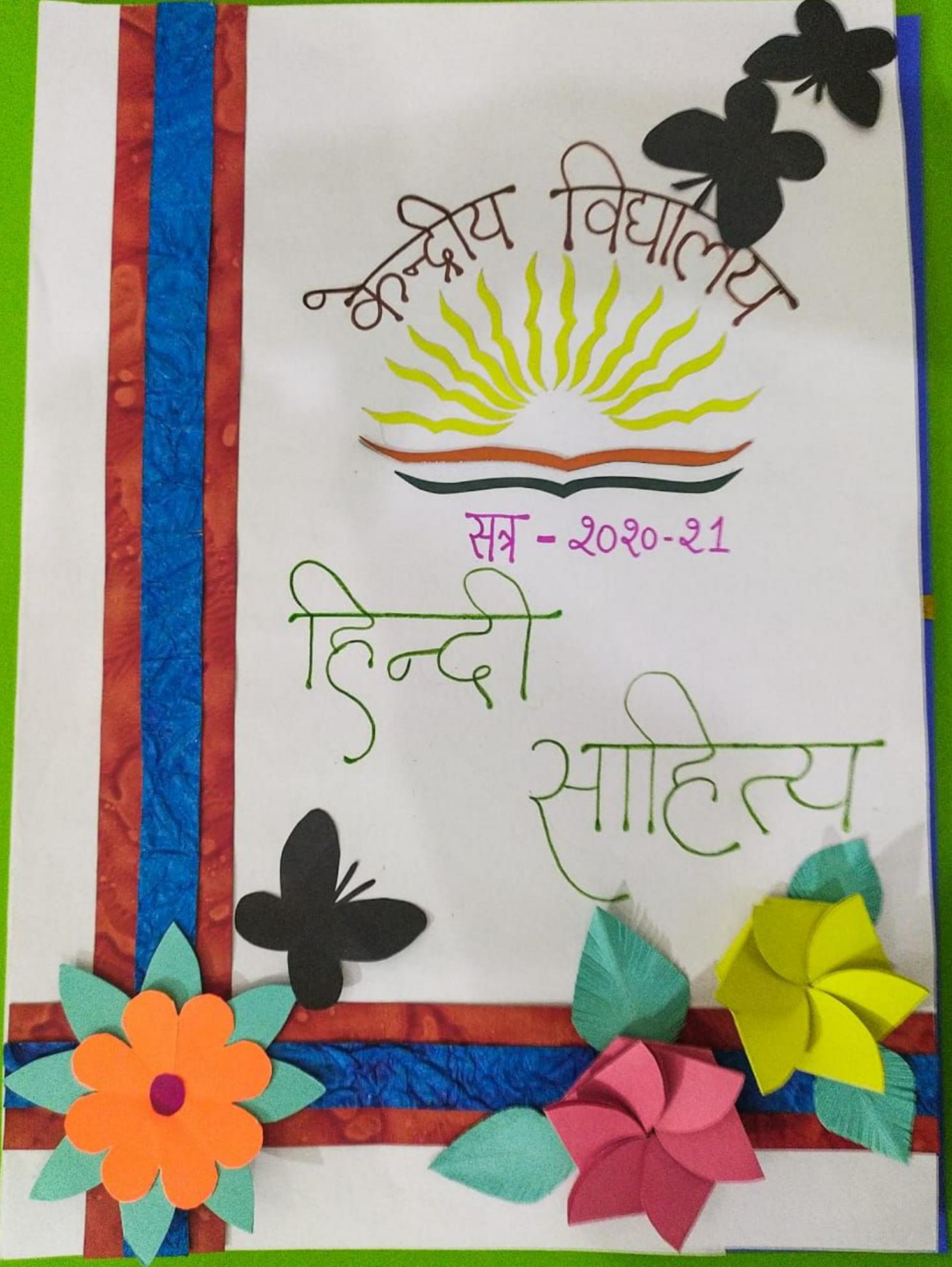


सत्र - २०२०-२१

हिन्दी साहित्य



श्री विघ्नामूर्ति

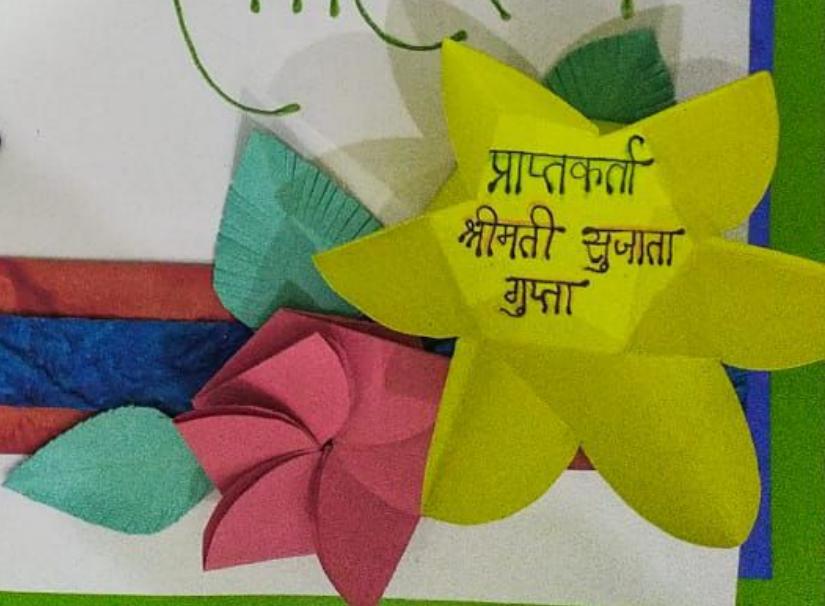


सत्र - २०२०-२१

हिन्दी

साहित्य

प्राप्तकर्ता
श्रीमती सुजाता
गुफा



झाय विद्यालय



सत्र - २०२०-२१

हिन्दी

साहित्य

प्रस्तुतकर्ता
वन्दना



आभार

मैं अपनी शिक्षिका श्रीमती सुजाता गुप्ता के प्रति आभार व्यक्त करना चाहती हूँ। उन्होंने मुझे इस परियोजना कार्य के लिए प्रेरित किया। उनकी सहायता व प्रोत्साहन के बिना इस परियोजना का सफल होना संभव नहीं था। मैं अपने प्रधानाध्यापक श्री करुणाकर उपाध्याय की आभारी हूँ। उन्होंने मुझे अनुसन्धान करने और इस अद्भुत परियोजना को पूरा करने का अवसर दिया।

मैं अपने माता-पिता को धन्यवाद करना चाहती हूँ। उन्होंने मुझे इस परियोजना कार्य को पूरा करने के लिए प्रोत्साहित किया। मैं अपने मित्रों को धन्यवाद कहती हूँ। उन्होंने इस परियोजना को सफलतापूर्वक करने में मदद करी।

विषय - सूची

- परिचय

- हिन्दी साहित्य
- हिन्दी साहित्य का इतिहास

- आधुनिक काल

- सूर्यकांत त्रिपाठी
- हरिवंश राय बच्चन
- महादेवी वर्मा
- सुमित्रानन्दन पंत
- कुँवर नारायण
- धनपत राय
- मन्नू भण्डारी
- यशपाल जौशी
- शीखर जौशी
- स्वयं प्रकाश

- हिन्दी की विभिन्न बोलियों का साहित्य



हिन्दी



अ र ल क भ
य छ प क घ
उ न श स द
ध थ ए ठ व

क त
व ग
म ट
ख ब
र फ
ग ल
त ल
आ र ण
त र ण
क ल
स ष

हिन्दी साहित्य

साहित्य समाज का रक आईना है जिसमें हम समाज को देखते हैं अर्थात् यह मानवीय जीवन का चिन्ह होता है। किसी भाषा के वाचिक और लिखित (शास्त्रग्रन्थ) को साहित्य कह सकते हैं। दुनिया में सबसे पुराना वाचिक साहित्य हमें आदिवासी भाषाओं में मिलता है। इस दृष्टि से आदिवासी साहित्य सभी साहित्य का मूल स्रोत है। **हिन्दी** भारत और विश्व में सर्वाधिक बोले जाने वाली भाषाओं में से एक है। हिन्दी का आरंभिक साहित्य **अपध्यंश** में मिलता है। हिन्दी में उ प्रकार का साहित्य मिलता है:-

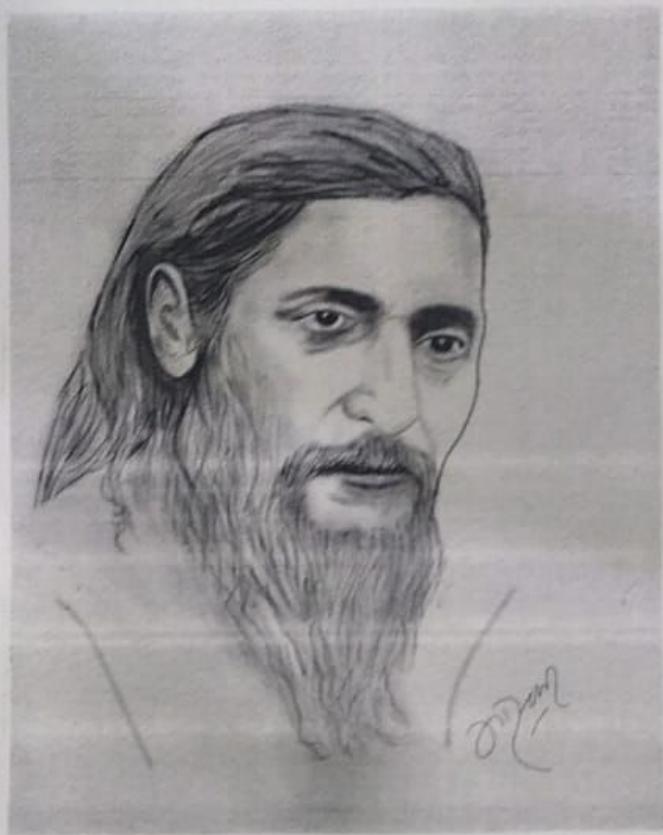
1. **गद्य**: मनुष्य की बोलने या लिखने पढ़ने की छंदरहित साधारण व्यवहार की भाषा को गद्य कहा जाता है।
2. **पद्य**: पद्य साहित्य की वह विधा है जिसमें किसी कहानी या गतोभाव को कलात्मक रूप से किसी भाषा के द्वारा अभिव्यक्त किया जाता है।
3. **चम्पू**: जो गद्य और पद्य दीनों में ही उसी चम्पू कहते हैं।

ज्यादातर साहित्यकार लोला श्रीनिवासदास ब्राह्मण लिखे गए उपन्यास परीक्षा गुरु को हिन्दी की पहली प्रामाणिक गद्य रचना मानते हैं। हिन्दी ने अपनी शुरुआत कविता के माध्यम से जो कि उगादातर लोकभाषा के साथ प्रयोग कर विकसित की गई।

हिन्दी साहित्य की विधाएँ

| | | |
|----------|-----------------|----------------|
| नाटक | आत्मकथा | विज्ञान कथा |
| एकांकी | जीवनी | व्यंग्य |
| उपन्यास | डायरी | पुस्तक-समीक्षा |
| कहानी | यात्रा व्रत | पर्यालोचन |
| आलोचना | रिपोर्टर्ज | साक्षात्कार |
| निबन्ध | कविता | |
| संस्मरण | लघुकथा | |
| ऐतिहासिक | प्रहसन (कामेडी) | |

- हिन्दी साहित्य का इतिहास :** हिन्दी का आरम्भ आठवीं शताब्दी से माना जाता है। हिन्दी साहित्य के विकास को आलोचक शुविधा के लिए 5 ऐतिहासिक चरणों में विभाजित कर देखते हैं, जो निम्नलिखित हैं:-
- **आदिकाल** → (1365 विक्रम संवत् से पहले) इस काल में चंद्रबरदाई, जयचंद आदि ऐसे महाकवी हुए।
 - **भक्तिकाल** → हिन्दी साहित्य का भक्तिकाल 1375 से 1700 विक्रमी तक माना जाता है। यह काल प्रमुख रूप से भक्त भावना से ओतप्रोत काल है। इस काल को समृद्ध बनाने वाली दो काव्य धाराएँ हैं:
 - i) **निर्गुण भक्तिधारा** - संत काव्य एवं सूफी काव्य।
 - ii) **संगुण भक्तिधारा** - रामानन्दी शाखा एवं कृष्णानन्दी शाखा।
 - **रीति काल** → हिन्दी साहित्य में रीति काल संवत् 1700 से 1900 तक माना जाता है। इस काल में अधिकांश कवियों ने शृंगार वर्णन, अलंकार प्रयोग, छंद बद्धता आदि बंदी रखते की ही कविता की।
 - **आधुनिक काल** → (1800 ईस्टी के पश्चात) काव्य में इसे छायावादी युग, प्रगतिवादी युग, प्रयोगवादी युग और यथार्थवादी युग के नामों से जाना गया और गद्य में इसको भारतेन्दु युग, द्विदी युग, रामचंद शुक्ल व प्रेमचंद युग तथा अद्यतन युग का नाम दिया गया।
 - **नव्योत्तर काल** → (1980 ईस्टी के पश्चात) इस काल की कई धाराएँ हैं:
 - i) परिचम की नकल को छोड़ एक अपनी वाणी पाना
 - ii) अतिशय अलंकार से परे सरलता पाना
 - iii) जीवन और समाज के प्रश्नों पर असंदिग्ध विचार



... * ...

बादल , गरजौ
घेर घेर घोर गगन, धाराधर ओ !

सूर्यकांत त्रिपाठी

जन्म - 1899

निधन - 1961

उपनाम - निराला

जन्म स्थान - मिठानापुर, उत्तर प्रदेश

कुछ प्रमुख रचनाएँ - अनामिका, परिमल, गीतिका, बेला, नरा पत्ते, प्रभावती, चतुरी चमार, काले कारनामे।

काल - आधुनिक काल (छायावादी युग)

विविध -

कविता को न्या स्वर देने वाले निराला छायावाद के ऐसे कवि हैं जो यह और कबीर की परंपरा से जुड़ते हैं तो दूसरी ओर समकालीन कवियों के प्रेरणा स्रोत भी हैं। उनके स्वभाव में निर्भकता, स्वाभिमानिता, स्पष्टवादिता, फक्कड़पन, सौंदर्य चेतना आदि जैसे उच्च गुण विद्यमान थे। निराला जी महान् क्रांतिकारी रह्ये औजस्वी साहित्यकार थे। उनका यह विस्तृत काव्य - संसार अपने भीतर संघर्ष और जीवन, क्रांति और निर्माण, औज और माधुर्य, आशा और निराशा के दबंद को कुछ इस तरह समैते हुए है कि वह किसी शीमा में बंध नहीं पाता।

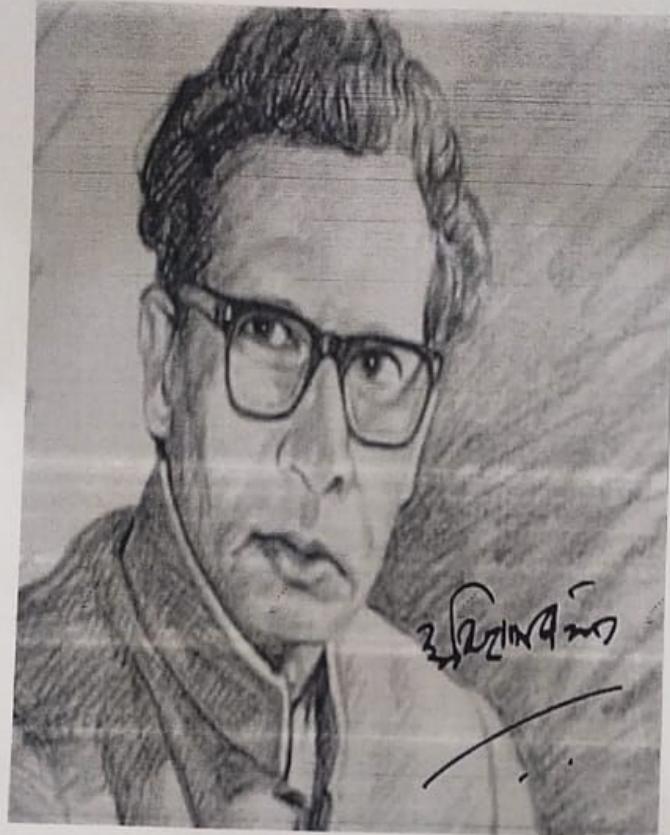
विषयों और भावों की तरह भाषा की सृष्टि से भी निराला की कविता के कई रंग हैं। यह तरफ तत्सम सामाजिक पदावली और ध्वन्यात्मक विषयों से युक्त राम की शक्ति पूजा और कठिन छंद - साधना का प्रतिमान तुलसीदास है, तो दूसरी तरफ देशी शहरों का सेंधापन लिरा कुकुरमुत्ता, रानी और कानी,

ललित ललित , काले घुँघराले ,
बाल कल्पना के से पाले ,
विद्युत-छबि उर मैं, कीवि , नवजीवन वाले !
वेज्र छिपा , नृतन कविता
फिर भर दौ
बोदल , गरजो !

- उत्साह

महर्गु महँगा रहा जैसी कविताएँ हैं।
धिक् जीवन तो पाता ही आया विरोध,
फहने वाले निराला उत्कट आत्मशक्ति और
अद्भुत जिजीविषा के कवि हैं। जो हार नहीं
मानते और निराशा के क्षणों में शक्ति की
मौलिक कल्पना कर शक्ति का साधन छुटाते
हैं।

उनके काव्य में प्रगतिवाद, रहस्यवाद, प्रयोगवाद
एवं नई कविता के सभी तत्व दिखाई पड़ते हैं।
प्रगतिवादी कविताओं के विद्रोही स्वर के कारण ही
निराला जी को विद्रोही कवि कहा गया है।
उनकी रचनाओं में तत्कालीन, सामाजिक रख
आर्थिक विषमता का चित्रण मिलता है। उन्होंने
प्रकृति के मनोरम रखें अयानक दोनों रूपों का
चित्रण मिलता है। उन्होंने साहित्य में बंधनों का
विरोध किया।



जब तक न सफल हो, नीद चैन को त्यागो तुम,
संघर्ष का मैदान छोड़ कर मत भागो तुम।
कुछ किरण बिना ही जय जय कार नहीं होती,
कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती।

हीरेंश राय बच्चन

जन्म - १९०७

निधन - २००३

उपनाम - बच्चन

जन्म स्थान - इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश

कुछ प्रमुख रचनाएँ - मधुशाला, मधुबाला, मधुकलश, निशा
निमंत्रण, रकात संगीत, आकृत - अंतर, मिलनयामी, सतरंगी।

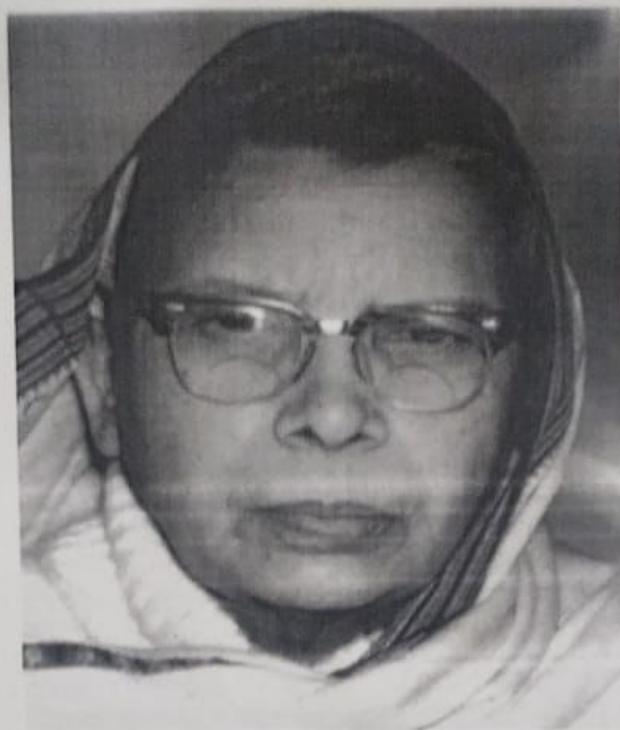
दूटी - फटी कड़ियाँ, क्या भूलूँ क्या याद करूँ, प्रवासी की डायरी।

काल - आधुनिक काल (छायावादी युग)

विविध -

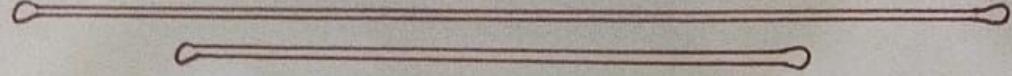
१९४२ - १९५२ तक इलाहाबाद विश्वविद्यालय में प्राध्यापक,
आकाशवाणी के साहित्यिक कार्यक्रमों से संबद्ध, फिर विदेश
मंत्रालय में हिन्दी विशेषज्ञ रहे। उन्होंने छायावाद की
लाभापिक वक्रता के बजाय सीधी - सादी जीवंत आषा
और सर्वदैनन्दित गेय शैली में अपनी बात कही। व्यक्तिगत
जीवन में घटी घटनाओं की सहज अनुभूति की
ईमानदार अधित्यकित बच्चन के यहाँ कविता बनकर प्रकाट
हुई। यह विशेषता हिन्दी काव्य संसार में उनकी
विलक्षण लोकप्रियता का मूल आधार है।

बच्चन का कवि-रूप सबसे विख्यात है, पर
उन्होंने कहानी, नाटक, डायरी आदि के साथ बेहतरीन
आत्मकथा भी लिखी है - जो ईमानदार आत्मस्तीकृत
और प्रांजल शैली के कारण निरंतर पठनीय बनी
हुई है।



लोकप्रियता कभी रचना का मानक
नहीं बन सकती। असली मानक तो
होता है रचनाकार का दायित्वबोध,
उसके सरोकार, उसकी जीवन दृष्टि

महादेवी वर्मा



जन्म - १९०७

निधन - १९८७

उपनाम - आधुनिक मीरा

जन्म स्थान - फर्रुखाबाद

कुछ प्रमुख रचनाएँ - यम, मेरा परिवार, पथ के साथी,
नीहार, रश्मि, नीरजा, दीपशिखा, अतीत के चलचित्र,
स्मृति की रेखाएँ, शृंखला की कड़ियाँ।

काल - आधुनिक काल (छायावादी)

विविध -

महादेवी जी छायावाद के प्रमुख कवियों में से
एक थीं। उन्हें "आधुनिक मीरा" के नाम से भी जाना जाता
है। कवि निराला ने उन्हें "हिन्दी के विशाल मन्दिर की
सरस्वती" भी कहा है।

महादेवी वर्मा की साहित्य साधना के पीछे एक और
आजादी के आंदोलन की प्रेरणा है तो दूसरी और भारतीय
समाज में स्त्री जीवन की वास्तविक स्थिति का बोध भी
है। हिन्दी गद्य साहित्य में संस्मरण एवं रेखाचित्र को
बुलंदियों तक पहुँचाने का श्रेय महादेवी जी को है। उनके
संस्मरणों और रेखाचित्रों में शैषित, पीढ़ित लोगों के प्रति
ही नहीं बल्कि पशु-पक्षियों के लिए भी आत्मीयता एवं
अक्षय करुणा प्रकट हुई है। उनकी भाषा - शैली सरल
एवं स्पष्ट है तथा शब्द चयन प्रभावपूर्ण और
चित्रात्मक।



... * ...

अंधकार की गुहा सरीखी
उन आँखों से उरता है मन,
अरा दूर तक उनमें दारूण
दैन्य दुख का नीरा रोदन !

सुमित्रानंदन पंत

जन्म - १९००

निधन - १९७७

उपनाम - गोसाई दत्त

जन्म स्थान - कोसानी (उत्तरांचल)

कुछ प्रमुख रचनाएँ - वीणा, ग्रंथि, पल्लव, गुंजन, युगावाणी, ग्राम्या, चिंदवरा, उत्तरा, स्वर्ण किरण, काला और बूढ़ा चाँद, लोकायतन आदि।

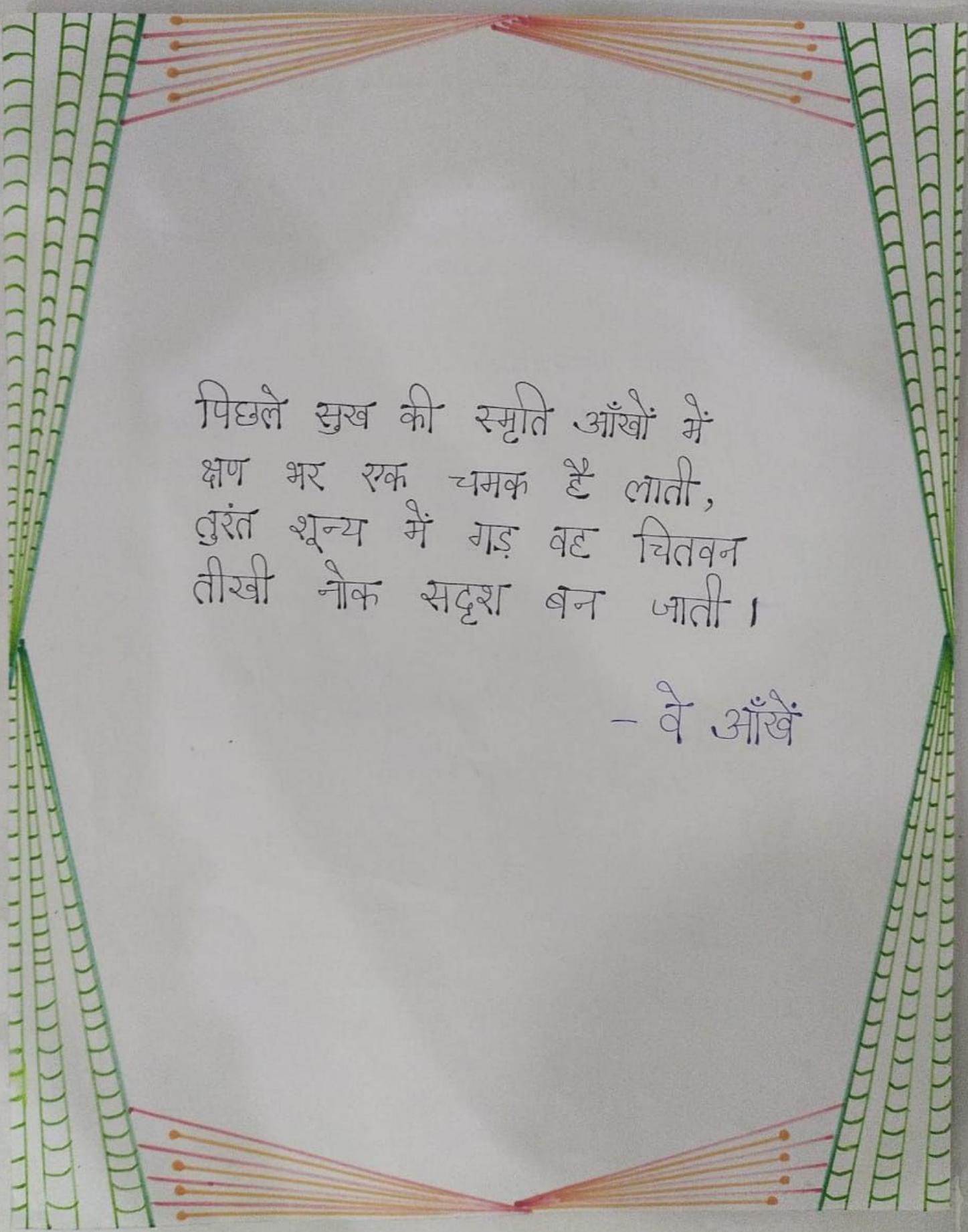
काल - आधुनिक काल (छायावादी युग)

विविध -

छायावाद के महत्वपूर्ण स्तंभ सुमित्रानंदन पंत प्रकृति के चित्रे कवि हैं। हिंदी कविता में प्रकृति को पहली बार प्रमुख विषय बनाने का काम पंत ने ही किया। उनकी कविता प्रकृति और मनुष्य के अंतरंग संबंधों का दर्शावेज है।

युवावस्था तक पहुँचते-पहुँचते महात्मा गांधी के असहयोग आंदोलन से प्रभावित होकर पदाई बीच में ही छोड़ दी। उसके बाद स्वतंत्र लेखन करते रहे।

पल-पल परिवर्तित प्रकृति तेज़ इन्हें ज्ञान की तरह आकृष्ट कर रहा था। बाद में बल कर प्रगतिशील दौर में ताज और ते आँखें जैसी कविताएँ भी लिखीं। उसके मध्य ही अरविन्द के मानववाद से प्रभावित होकर मानव तुम सबसे सुंदरतम् जैसी पंक्तियाँ भी लिखते रहे। उन्होंने नाटक, कहानी, आत्मकथा, उपन्यास और आलोचना के क्षेत्र में भी काम किया है। रूपाभ नामक पत्रिका का संपादन भी किया जिसमें प्रगतिवादी साहित्य पर विस्तार से विचार-विवरण

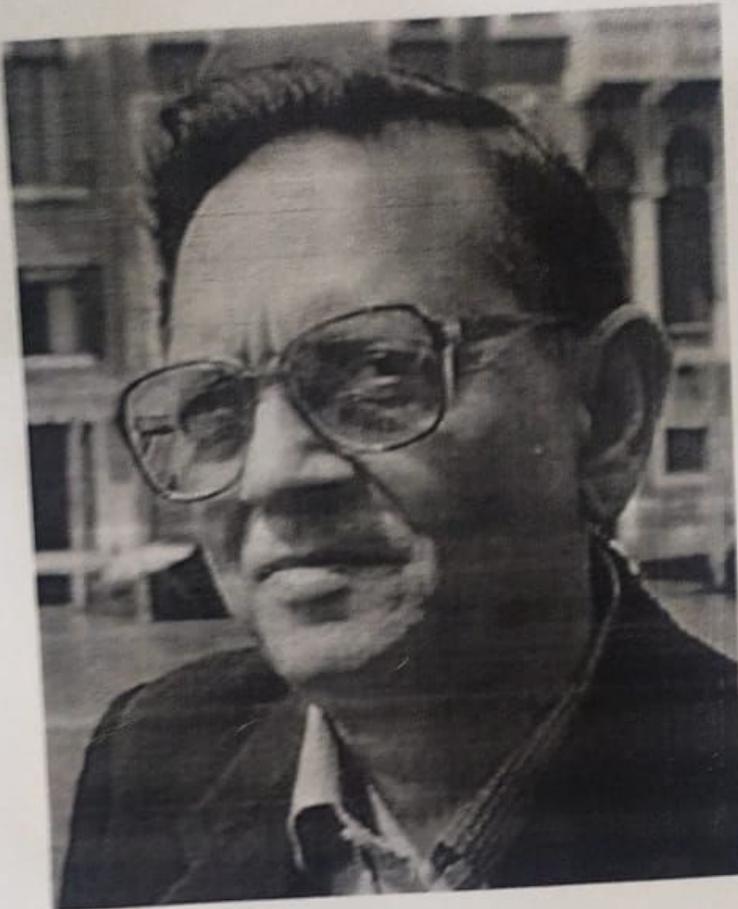


पिछले सुख की स्मृति आँखों में
क्षण भर रक्ख चमक है लाती,
तुरंत शून्य में गड़ वह चितवन
तीखी नौक सदूर बन जाती ।

- वे आँखें

होता था।

पंत जी भाषा के प्रति बहुत सर्वोत्तम थे। इनकी रचनाओं में प्रकृति की जादूगरी जिस भाषा में अभियंत दुई हैं उसे खयं पंत चिन्ह भाषा (बिंबात्मक भाषा) की संज्ञा देते हैं। ब्रजभाषा और खड़ी बोली के विवाद में उन्होंने खड़ी बोली का पक्ष लिया और पल्लव की भूमिका में विस्तार से खड़ी बोली का समर्थन किया।



... • ***** • ...
बात सीधी थी पर रुक बार
भाषा के चक्कर में
झरा हेठी फँस गई।

कुंवर नारायण

जन्म - १९२७

निधन - २०१७

उपनाम - कुंवर नारायण

जन्म स्थान - मैजाबाद, उत्तर प्रदेश

कुछ प्रमुख स्थानों - चक्रव्यूह, परिवेश : हम तुम, अपने सामने, कोई दूसरा नहीं, इन दिनों, आत्मजयी, आकारों के आस-पास, आज और आज के पहले, मेरे साक्षात्कार।
काल - आधुनिक काल

विविध -

गर्दू से टंकी हुर पुरानी किताब खोलने की बात कहने वाले कुंवर नारायण ने सन १९५० के आस-पास काव्य-लेखन की शुरूआत की। उन्होंने कविता के अलावा चित्प्रकाशन, कहानियाँ और सिनेमा तथा अन्य कलाओं पर समीक्षाएँ भी लिखी हैं, किन्तु कविता की विधा को उनके सृजन-कर्म में हमेशा प्राथमिकता प्राप्त रही। नयी कविता के दौर में, जब प्रबंध काव्य का स्थान प्रबंधित को दीवेदार लंबी कवितारों लेने लगी तब कुंवर नारायण ने आत्मजयी जैसा प्रबंध काव्य स्वचक भरपूर प्रतिष्ठा प्राप्त की। आलोचक मानते हैं कि उनकी "कविता में व्यर्थ का उलझात अखबारी सतहीपन और वैचारिक धुंध के बजाय संयम, परिष्कार और साफ-सुथरापन है।"

भाषा और विषय की विविधता उनकी कविताओं के विशेष गुण माने जाते हैं। उनमें व्याख्यात का खुरदरापन भी मिलता है और उसका सहज

बात ने, जो एक शरारती बच्चे की तरह
मुझसे खेल रही थी,
मुझे पसीना पौंछते देख कर पूछा -
“क्या तुमने भाषा को
सहलियत से बरतना कभी नहीं सीखा?”

- बात सीधी थी पर

सौंदर्य भी। कुँवर जी पूरी तरह नागर संवेदना
के कवि हैं। विवरण उनके यहाँ नहीं के बराबर
हैं। पर वैयक्तिक और सामाजिक ऊटापोह का
तनाव पूरी व्यंजकता में सामने आता है।



कहानी ऐसी रचना है जिसमें जीवन के
किसी अंग या किसी एक मनोभाव को
प्रदर्शित करना ही लेखक का उद्देश्य
रहता है। उसके चरित्र, उसकी शैली,
उसका कथा-विन्यास सभी उसी एक
भाव को पुष्ट करते हैं।

धनपत राय

जन्म - 1880

निधन - 1936

उपनाम - प्रेमचंद

जन्म स्थान - बनारस, उत्तर प्रदेश

कुछ प्रमुख स्थानरूप - मानसरोवर, सैवासदन, प्रेमाश्रम, रंगभूमि, कायाकल्प, निमला, गबन, कर्मभूमि, गोदान, हंस, जागरण, माधुरी आदि।

काल - आधुनिक काल

विविध -

प्रेमचंद का मूल नाम धनपत राय था। उन्होंने शिक्षा विभाग में नौकरी की परंतु असहयोग आंदोलन में सक्रिय भाग लेने के लिए सरकारी नौकरी से त्यागपत्र दे दिया और लैखन कार्य के प्रति पूरी तरह शम्पर्त हो गए।

प्रेमचंद साहित्य की सामाजिक परिवर्तन का सशक्त माध्यम मानते थे। उन्होंने जिस गाँव और शहर के परिवेश को देखा और जिया उसकी अभिव्यक्ति उनके कथा साहित्य में मिलती है। किसानों और मजदूरों की दयानीय स्थिति, दलितों का शोषण, समाज में स्त्री की दुर्दशा और स्वाधीनता आंदोलन आदि उनकी रचनाओं के मूल विषय हैं।

प्रेमचंद के कथा साहित्य का संसार बहुत व्यापक है। उसमें मनुष्य ही नहीं पशु - पक्षियों को भी अद्भुत आत्मीयता मिली है। बड़ी सी

बड़ी बात को सरल भाषा में सीधे और संक्षेप
में कहना प्रेमचंद के लेखन की प्रमुख
विशेषता है। उनकी भाषा सरल, सजीव रखे
मुहावरेदार है तथा उन्होंने अरबी, फारसी और
अंग्रेजी के प्रचलित शब्दों का प्रयोग
कुशलतापूर्वक किया है।



... * ...

राज्य पूछा जारा तो बड़ा न आदगी
होता है, न घटना।
यह तो बस, गौके-मौके की बात होती है।

- महात्मा

मन्नू भंडारी

पेन्मा - 1931

निधन - -

उपनाम - मन्नू भंडारी

जन्म स्थान - भानपुरा, मध्यप्रदेश

कुछ प्रमुख रचनाएँ - मैं हार गई, एक प्लेट सैलाब, आँखों
देखा झूठ, यही सच है, आपका बंटी, एक इंच मुस्कान,
रजनी, दर्पण, स्वामी, महाभौज आदि।

काल - आधुनिक काल

विविध -

उनका मूलनाम महेन्द्र कुमारी था। उन्होंने नहीं कहाती
आनंदोलन में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। वे सिद्धा
हस्त कलाकार हैं। उन्होंने सामाजिक रूप से परिवारिक जीवन
का यथार्थ चित्र प्रस्तुत किया है। उन्होंने नारी जीवन
एवं विभिन्न वर्गों के जीवन की विसंगतियों
को विशेष रूप से अभिव्यक्त किया है। उन्होंने
अपनी रचनाओं में आकृति, संवेदना और व्यंग्य
को वैज्ञानिक ढंग से प्रस्तुत किया है।

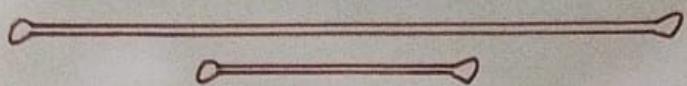
मन्नू भंडारी की भाषा अत्यंत सरल, सहज
स्वाभाविक रूप भावभिव्यक्ति में पूर्ण राक्षग है।
उनकी रचनाओं में आग बोलचाल की भाषा के
साथ - शाथ उर्दू, फारसी, अंग्रेजी के शब्दों का
प्रचुरता से प्रयोग हुआ है। उनकी कहानियाँ ही या
उपन्यास उनमें भाषा तथा शिल्प की सादगी रूप
प्रामाणिक अनुभूति मिलती है। उन्होंने वर्णनात्मक,
सामाजिक रूप संवाद शैली का प्रयोग किया
है।



खीरे की सुगंध और स्वाद की कल्पना से
पैट भर जाने की डकार आ सकती है
तो बिना विचार, घटना और पात्रों के
लेखक की इच्छा मात्र से 'नई कहानी'
क्यों नहीं बन सकती ?

— लखनवी अंदाज

यशपाल



जन्म - 1903

निधन - 1976

उपनाम - यशपाल

जन्म स्थान - फिरोजपुर, पंजाब

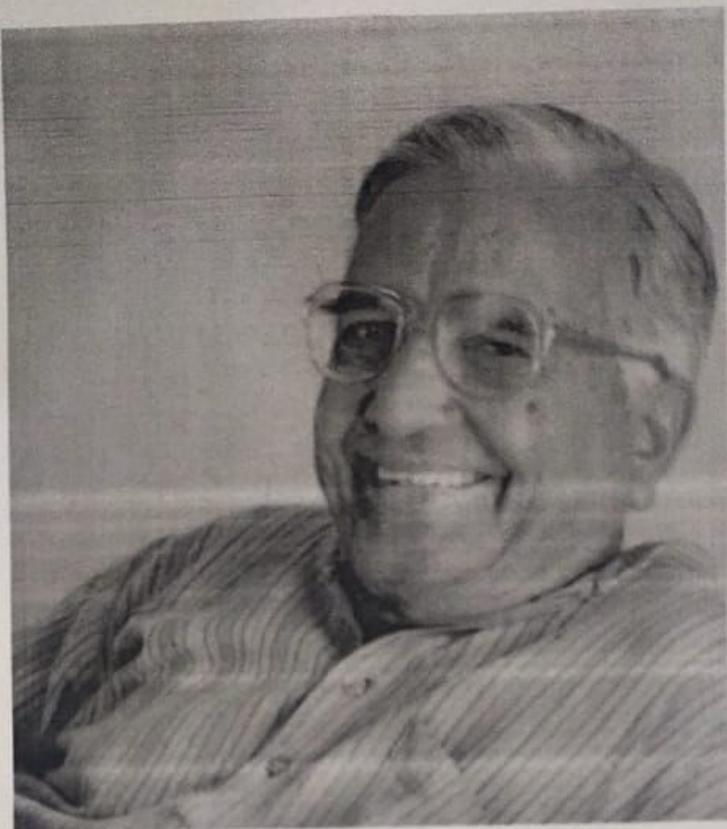
कुछ प्रमुख स्थान - वैदुनिया, पिंजरे की उड़ान, तकि का तूफान, जानदान, सच बोलने की भूल, मनुष्य के रूप, क्यों फँसे, बारह दंठे, झूला सच, नशे-नरों की बात, चक्कर कलब, न्याय का संघर्ष आदि।

काल - आधुनिक काल

विविध -

यशपाल जी की स्थानरूप आम आदमी से जुड़ी हुई हैं। उन्होंने स्वदेशी आनंदोलन में बढ़ावद कर भाग लिया। उनकी स्थानाओं पर मार्कर्सवाद का प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। उनकी स्थानाओं में सामाजिक विषमता, राजनीतिक पाखंड, पौराणिक रुप से ऐतिहासिक तथ्यों के दर्शन होते हैं। उनकी अधिकतर कहानियाँ चिंतन प्रदान हैं। उन्होंने जीवन की वास्तविकता का चित्रण बहुत ही आकर्षक रुप से यथार्थ रूप से किया गया है।

यशपाल जी की भाषा अत्यंत सरल, साहज और पात्रानुकूल है। उनकी स्थानाओं में विषयानुकूल उट्टु-फारसी रुप अंगूजी शब्दों का प्रयोग किया गया है। उनकी भाषा में व्यवहारिकता रुप से स्वाभाविकता व सजीवता का गुण विशेषरूप से विद्यमान है। उन्होंने वर्णनात्मक व्यंग्यात्मक रुप से संवाद प्रधान प्रभावशाली शीली को अनाया है।



उसकी आँखों में एक सर्जक की चमक
थी - जिसमें न स्पृह थी और
न ही किसी प्रकार की द्वार-जीत
का भाव।

- गलता लोहा

शेखर जोशी

जन्म - 1932

निधन - -

उपनाम - शेखर जोशी

जन्म स्थान - अल्मोड़ा, उत्तरांचल

कुछ प्रमुख स्वचालन - कौसी का घटवार, साथ के लोग, दाज्यू, हलवाणी, नौरंगी बीमार हैं, एक पैड की याद, मेरा पहाड़ आदि।

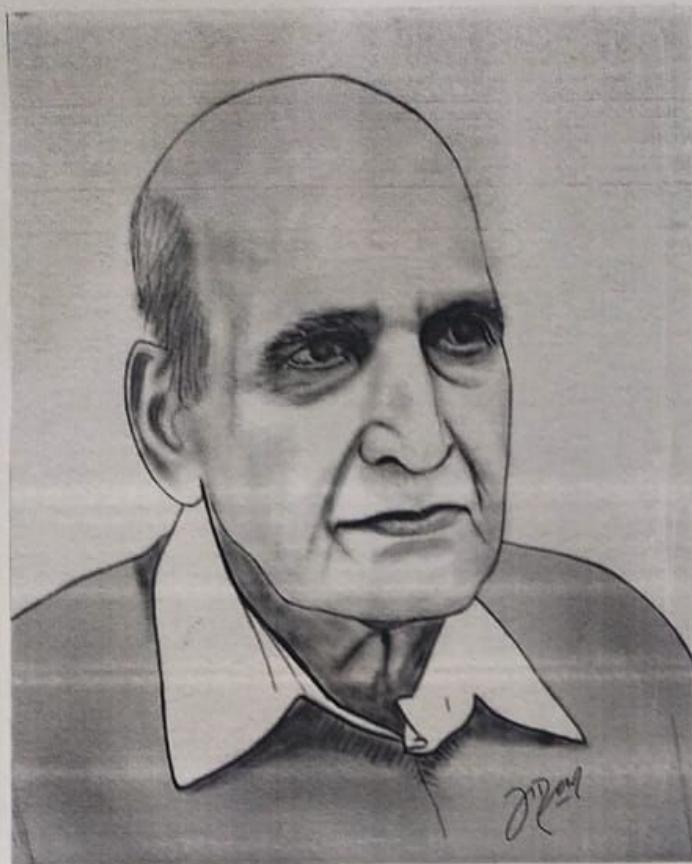
काल - आधुनिक काल

विविध -

पिछली सदी का छठवाँ दशक हिंदी कहानी के लिए युगांतकारी समय था। एक साथ कई युवा कहानीकारों ने अब तक चली आती कहानियाँ के रंग-टंग से अलग तरह की कहानियाँ लिखनी शुरू की और देखते-देखते कहानी की विद्या साहित्य - जगत के केंद्र में आ खड़ी हुई। उस पूरे उठान को नाम दिया गया नहीं कहानी आंदोलन। इस आंदोलन के बीच उभरी हुई प्रतिभाओं में शेखर जोशी का स्थान अन्यतम है। उनकी कहानियाँ नई कहानी आंदोलन के प्रगतिशील पक्ष का प्रतिनिधित्व करती हैं। उनके स्वचन - संसार से गुजरते हुए समकालीन जनजीवन की बहुविधि विडंबनाओं को महसूस किया जा सकता है। समाज का मैहनतकरण और सुविधाएँ तबका उनकी कहानियों में जगह पाता है। निदायत सहज रूप से आडंबरहीन भाषा - शैली में वे सामाजिक यथार्थ के

बाईक शब्दों को पढ़ते और प्रस्तुत करते हैं। रेसा करने में उनकी प्रगतिशील जीवन-दृष्टि और यथार्थ बोध का बड़ा योगदान रहा है।

अतिरिक्त जी की कहानियाँ विभिन्न आरतीय भाषाओं के अनुवाद अंग्रेजी, फ्रेंच और रुसी में भी अनूदित हो चुकी हैं। उनकी प्रसिद्ध कहानी **दाङ्य** पर चिल्ड्रंस मिल्म का निर्माण भी हुआ है।



क्या होगा उस कौम का जो अपने
देश की खातिर घर - गृहस्थी - जवानी -
जिंदगी सब कुछ हीम देनेवालों पर भी
हूँसती है और अपने लिए बिकने के मौके
दूँढ़ती है।

- नेताजी का चरमा

स्वयं प्रकाश

जन्म - १९४७

निधान - २०१९

उपनाम - स्वयं प्रकाश

जन्म स्थान - इंदौर, मध्य प्रदेश

कुछ प्रमुख स्चनारे - सूरज कब निकलेगा, आरंगे अच्छे दिन भी, आदमी जात का आदमी, बीच में विनय, ईदान, अगले जन्म, संघान आदि।

काल - आधुनिक काल

विविध -

स्वयं प्रकाश जी की कहानियों में वर्ग शैषण के विरुद्ध चेतना का भाव दृष्टिगोचर होता है। उन्होंने मध्यमवर्ग के लोगों के जीवन को अपनी स्चनाओं के माध्यम से बड़ी कुशलता से चित्रित किया है।

उन्होंने अपनी स्चनाओं में सामाजिक जीवन में जाति, संप्रदाय और लिंग के आधार पर ही है भेदभाव के विरुद्ध प्रतिकार के स्वर को उभारा है।

स्वयं प्रकाश ने अपनी स्चनाओं के लिए सामान्य जनता में बोली भाने वाली खड़ी बोली को अपनाया है। उनकी भाषा अत्यंत सरल, सहज रूप प्रभावोत्पादक है। उन्होंने तत्सम-तद्भव व देशज शब्दों के अतिरिक्त उट्ट-फारसी तथा अंग्रेजी भाषा की शब्दावली का मुक्त-हस्त से प्रयोग किया है। उन्होंने हास्यात्मक रूप व्यंग्यात्मक शैली का सफल प्रयोग किया है। उन्होंने एक वाक्य में अनेक भाषाओं के प्रचलित शब्दों का प्रयोग करके एक नई परिपाठी बनाई है जो पाठक के लिए सहजता से समझने रुप से भाव ग्रहण करने की भावना उत्पन्न कर दिया है।

हिन्दी की विभिन्न बोलियों का साहित्य

भाषा के विकास-क्रम में अपध्रंश से हिन्दी की और आते हुए भारत के अलग-अलग स्थानों पर अलग-अलग भाषा-शैलियाँ जन्मीं। हिन्दी इनमें से सबसे अधिक विकसित थी, अतः उसको भाषा की मान्यता मिली। अन्य भाषा शैलियाँ बोलियाँ कहलाई। इनमें से कुछ में हिन्दी के महान कवियों ने रचना की जैसे तुलसीदास ने रामचरित मानस को अवधी में लिखा और सूरदास ने अपनी रचनाओं के लिए बृज भाषा की चुना, विद्यापति ने मैथिली में और मीराबाई ने राजस्थानी को अपनाया।

हिन्दी की विभिन्न बोलियों का साहित्य आज भी लोकप्रिय है और आज भी अनेक कवि और लेखक अपना लेखन अपनी-अपनी क्षेत्रीय भाषाओं में करते हैं।